सबकुछ यहाँ अविनाशी है...

हर कोई खुशी की तलाश तो कर ही रहा है, और वो खुशी सिर्फ खुशी ना हो, अविनाशी हो, नष्ट न हो, खत्म ना हो, बस हो! गम से परे, दुःख से परे एक ऐसा संसार जो पहले से था, है और रहेगा। बड़ा खुशकिस्मत होगा वह इंसान जो इसे प्राप्त करे।

बादशाह वो है जो हमेशा सुख की शैय्या पर अपने को अनुभव करता है। जिनके जीवन में दुःख ना हो। अब हमें यह ढूंढ़ना है कि दुःख का एक कारण है, वह है किसी भी चीज़ की अप्राप्ति। प्राप्ति सुख का साधन होती है। यह बात तो जग जाहिर है। अगर सुख के साधनों की बात करें तो उसे दो शब्दों में समेट सकते हैं - सम्बन्ध और सम्पत्ति। है कि नहीं! जिसके पास सबकुछ हो, लेकिन सम्बन्ध ठीक ना हो, तो भी वह सुखी इंसान नहीं माना जा सकता है। सम्बन्धों में भी किसी एक सम्बन्ध की कमी हो तो दुःख की लहर आ जाती है। अब आप सोचो ज़रा! इस दुनिया में विनाशी चीज़ों में, सम्बन्धों में सुख भी तो विनाशी ही होगा ना। आप हम सभी इस बात को मानें या ना मानें, सभी कोई न कोई सम्बन्ध को लेकर रोना रोते ही रहते हैं। इसलिए स्थायी व अविनाशी ढूंढ़ना तो पड़ेगा।

इसका सम्पूर्ण अस्तित्व जानने के लिए एक बात की गहराई में चलते हैं। वह यह है कि विश्व में कोई खज़ाना यदि श्रेष्ठ है तो वह है ज्ञान था समझ का खज़ाना। कोई भी किसी भी क्षेत्र में हो, महारत हासिल करता है तो किस क्षेत्र में..., पता है? वो है उस विषय में ज्ञान को बढ़ाने में। जैसे ही उस विषय में ज्ञान बढ़ा, सम्पत्ति अपने आप बढ़ ही जाती है। उससे अधिक से अधिक वह स्थूल धन भी कम लेता है। वह सब कुछ करता है, जो उसे करना चाहिए। लेकिन एक दायरे में रहकर वहाँ भी करना पड़ता है, नहीं तो सबकुछ नष्ट हो जाता है। अर्थात् मर्यादा की लकीर लांघी नहीं कि सबकुछ खत्म! वह ज्ञान तब तक सुख देता है, जब तक वह व्यक्ति स्वयं को

गलत संगत से बचाता है। जैसे ही वह बाह्य आकर्षण में फँसता है, उसका सबकुछ धीरे-धीरे नष्ट होता जाता है। यहीं से दुःख की शुरुआत हो जाती है।

यही बात ज्ञानी या समझदार आत्माओं पर भी लागू होती है। यहाँ इस संसार में स्थूल तो स्थूल है ही, सूक्ष्म से सूक्ष्म चीज़ भी अविनाशी है। क्योंकि सबकुछ अविनाशी श्रोत परमपिता परमात्मा से प्राप्त होता है। जो अविनाशी है, उसे अविनाशी तरीके से ही संजोना पड़ता है। जो दुःख हर्ता है, वह कभी भी अपने बच्चों को दुःखी नहीं देख सकता है। दुःख होता ही तब है जब हम स्वयं को विनाशी सुखों से भरपूर करने की कोशिश करते हैं। आपको यहाँ तन, मन, धन, जन का सुख पता नहीं कितना मिलेगा! लेकिन परमात्मा के पास हमेशा से ही सुख है। वह बादशाह है, और हमें भी अपने जैसा बादशाह ही बनाता है।

- ब्र.कु. अनुज,दिल्ली

आपको हम बता दें कि आप सभी अपनी बुद्धि को अविनाशी सुखों वाला बनाइए, क्योंकि इस दुनिया में दुःख, व्यर्थ संकल्प, विनाशी धन, कमज़ोर करने वाली बातें तो हमेशा ही आयेंगी और जायेंगी। लेकिन आप इनसे परेशान ना हों, क्योंकि ये अल्पकाल ही हैं, शारीरिक हैं, मानसिक नहीं। इसलिए बदलो, समझो, उस परमात्मा के साथ जीवन को संवार दो, तभी जीवन जीने का मज़ा है। नहीं तो लोगों के कर्मों में हम अपनी खुशी, शांति व सुख को गंवाएं, यह कहाँ की बुद्धिमानी है!

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दे

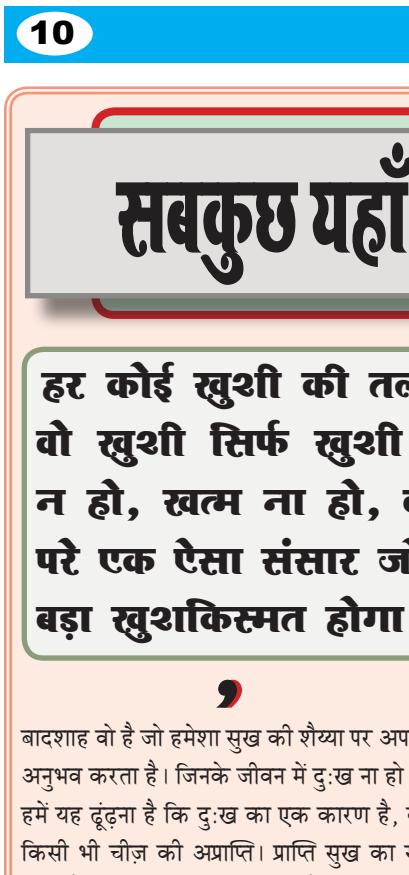

नवरंगपुर-ओडिशा। नये ज्वाइंट सुप्रिन्टेंडेंट ऑफ पुलिस विवेकानंद शर्मा,आई.पी.एस. को गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु. गीता तथा ब्र.कु. राखी।

प्रश्नः- मैं अधर कुमार हूँ, मेरे मन में एक शंका है कि बड़ी-बड़ी दादियों को व महारथी भाइयों को अंत में काफी शारीरिक भोगना हुई, तो हम जैसे गृहस्थियों का क्या होगा?

उत्तरः- प्यारे भाई... यहाँ सबके कर्मों की कहानी अलग-अलग है। कर्मभोग न केवल पूर्व के पाप कर्मों का फल है, वरन् वर्तमान खान-पान का भी प्रभाव है। आजकल अन्न व सब्जियां भी सात्विक नहीं हैं, मनुष्य अन्न के साथ न जाने क्या-क्या खाता है। पानी भी दूषित है, पानी के साथ भी वह न जाने क्या-क्या पीता है। शरीर में गन्दगी बहुत जाती है व कब्ज के कारण गन्दगी रहती भी है, ज़रा सी असावधानी गड़बड़ कर देती है।

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि बड़ों के पूर्व के पाप भी बड़े होते हैं। एक राजा का पल भर का गलत निर्णय अनेकों को कष्ट पहुंचा सकता है, यह बहुत बड़ा पाप हो जाता है, जबकि उतना पाप एक साधारण मनुष्य दो हज़ार वर्ष में भी नहीं करता। तीसरी बात ये महानात्माएं इस कर्मभोग के समय भी अच्छी स्थिति में रहीं, उन्हें पीड़ा का अनुभव नहीं हुआ। आपने सुना होगा कि साधारण आत्माएं बाबा के कमरे में बैठे-बैठे, बाबा को याद करते-करते शरीर छोड़ देती हैं, कई आत्माएं सवेरे चार बजे शरीर छोड़ती हैं। कई माताओं ने 18 जनवरी सवेरे देह छोड़ा। ये अपने-अपने गुप्त व सूक्ष्म पुरुषार्थ का या किसी विशेष पुण्य का प्रभाव होता है। अतः किसी की किसी से तुलना करना उचित नहीं। आप अशरीरी होने का श्रेष्ठ पुरुषार्थ करें, पुण्यों की पूंजी बढ़ायें, आप भी सहज भाव से कष्ट रहित चोला उतार सकेंगे।

प्रश्नः- मैं एक पच्चीस वर्षीय कुमार हूँ। मेरे माँ-बाप, भाई-बहन सब ज्ञान में हैं परन्तु मेरी माँ मेरी शादी करने का बहुत आग्रह कर रही है। कहती है पूरा जीवन अकेले कैसे बिताओगे। परन्तु मेरी इच्छा शादी करने की नहीं है। माँ बहुत भावुक हो जाती है, दुःखी

मन की बात
- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

हो जाती है, मैं कैसे उनका दुःख दूर करूं?

उत्तरः- भगवान की आज्ञा है -पवित्र बनो। इस आज्ञा को आपकी माँ भी जानती है। परन्तु ऐसी इच्छा रखना यह माताओं की बड़ी कमज़ोरी है। आपका उनसे व उनका आपसे सच्चा प्यार भी है। आप अकेले कैसे चलेंगे उनका यह प्रश्न बड़ा है! परन्तु क्या आप अकेले हैं? जिन्हें भगवान साथ दे रहा हो, वे अकेले कहाँ हैं! संसार में सभी तो गृहस्थी ही हैं, उनसे बात करो। आप दस गृहस्थियों से मिलकर उनके अनुभव पूछो...आपको पता चल जाएगा कि परिवार में रहते हुए भी वे अकेले हैं। वे खुश व संतुष्ट नहीं हैं। कुमार भाई, मनुष्य का परिवार चाहे कितना भी बड़ा हो, जीवन यात्रा पर तो हर एक को अकेले ही चलना है। अपना जन्म-जन्म का भाग्य आपको स्वयं बनाना है। वह आपकी माँ इस जन्म में हैं, अगले जन्म में नहीं होंगी। उनका आपसे मोह है, न कि प्यार। वे आपकी शुभ-चिन्तक भी नहीं हैं तथा वे स्वार्थ-भाव से ही सब कुछ सोच रही हैं। भगवानुवाच है- दूसरे की पवित्रता की रक्षा करना, सबसे बड़ा पुण्य है। यह बात माँ को भी सुनाओ व उन्हें अति प्यार से समझाओ कि परमात्म-मिलन का ये सुख बार-बार नहीं मिलता। उन्हें एहसास दिलाओ कि वे महान हैं, क्योंकि उनके बच्चे पवित्र जीवन जी रहे हैं, वे पूज्यनीय हैं जिन्होंने महानात्मा को जन्म दिया है। अब वे मोहवश अपनी महानता का त्याग न करें। आप स्वयं भी इस स्वरूप में आ जाओ कि मैं एक महान आत्मा हूँ तो माताजी का मन शान्त हो जाएगा। आप शक्तिशाली बन जाएं। एक बार भगवान को पवित्रता का वचन देकर तोड़ना - कैसा रहेगा? शादी तो सभी कर रहे हैं, परन्तु आपको तो विश्व को पवित्रता का दान देना है।

प्रश्नः- मैं एक बीस वर्षीय कुमार हूँ। मुझे माया से युद्ध करनी पड़ती है, पवित्र जीवन का सुख नहीं मिल रहा है। बार-बार विचार आता है कि ऐसे अकेला जीवन कब तक चलेगा। मेरी युद्ध की स्थिति है, मैं बाबा से दूर भी नहीं जाना चाहता। बताइये कैसे मैं आनन्दमय जीवन बनाऊं?

उत्तरः- कुमार जीवन तो वरदानी जीवन है। कई गृहस्थी सोचते हैं कि जब हम अविवाहित थे, तब ज्ञान में आते तो कितना अच्छा होता। बस कई कुमार एक बड़ी गलती करते हैं, जानते हो कौन सी? न अमृतवेले योग करते न मुरली सुनते। सेवा में आगे रहते हैं, इसलिए जीवन में रूहानियत नहीं आती। बिना योगबल के पवित्रता का सुख नहीं लिया जा सकता। योगबल से ही तो कर्मेन्द्रियाँ शीतल होती हैं। योगबल से ही सर्व विकार नष्ट होते हैं। यदि योग नहीं होता तो मनुष्य मनोविकारों को दबाये रखता है। ये दमन कष्टकारी होता है। अतः योग व ज्ञान का सुख लेने का दृढ़ संकल्प करो। योग अच्छा होने से ईश्वरीय सुख आपको तृप्तात्मा बनायेगा व आपके मन की चंचलता भी समाप्त होगी। आपको लगेगा ही नहीं कि आप अकेले हैं। खुदा दोस्त हर जगह आपको मदद करेगा। उससे आपको इतना प्यार मिलेगा कि दैहिक प्यार गौण हो जाएगा। इसलिए एकान्त में बैठकर स्वयं से इस तरह चिन्तन करो - मैंने ये कुमार जीवन अपनाया है, महान त्याग किया है। अब मैं योगी बनकर विश्व में बाबा का नाम रोशन करूंगा। एक बार पवित्रता का पथ अपना लिया तो बार-बार पीछे मुड़कर नहीं देखूंगा। भगवान ने मुझे 'पवित्र भव' का वरदान दिया है, मैं इस वरदान को फलीभूत करूंगा। मुझे प्रकृति को पवित्र वायब्रेशन्स देने हैं, मुझे दुखियों के दुःख हरने हैं, मुझे विश्व के लिए लाइट हाऊस बनना है - यह चिन्तन आपको अन्तर्मुखी बनायेगा, आपका युद्ध समाप्त हो जाएगा और आपके दिल से आवाज़ निकलेगी कि मेरे जैसा अच्छा जीवन किसी का नहीं। बस दृढ़ता लाओ, जिस पथ पर कदम रखा है उसमें सम्पूर्ण सफल होना है।

Contact e-mail
bksurya8@yahoo.com